Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

असामान्य व्यवहार का नैदानिक वर्गीकरण (Diagnostic Classification Of Abnormal Behaviour)

असामान्य व्यवहार अथवा मानसिक विकृति के वर्गीकरण का तात्पर्य इसके भिन्न-भिन्न वर्गों या प्रकारों से हैं, जिसे कुछ निश्चित आधारों पर,कुछ निश्चित प्रकारों,श्रेणियों या वर्गों में विभाजित किया जाता है। आधुनिक वर्गीकरण तंत्र की शुरुआत जर्मन मनोचिकित्सक क्रेपलिन के द्वारा असामान्य व्यवहार के संलक्षणो के आधार पर मानसिक रोगों को अलग-अलग वर्गों में विभाजित करके की गई परंतु मानसिक विकृतियों का वर्गीकरण विधिवत रूप से 1948 में स्थापित अमेरिकन मनोचिकित्सक संघ (American psychiatric association,APA) के द्वारा आरंभ हुआ।अमेरिकन मनोचिकित्सक संघ ने डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिसटिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर्स(diagnostic and statistical manual of mental disorders) के रूप में प्रथम वर्गीकरण तंत्र को 1952 में प्रकाशित किया। जिसे संक्षेप में DSM-1 कहा गया।
कालांतर में समय-समय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रतिपादित इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ डीजीजेस (international classification of diseases) ICD-8/1965, ICD-9/1979तथा ICD-10/1993 एवं अमेरिकन मनोचिकित्सक संघ द्वारा प्रतिपादित DSM-1/1952,DSM-2/1968,DSM-3/1980 , DSM-3R/1987, DSM-4/1994, तथा DSM-5/2013 के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत मानसिक विकृतियों या असामान्य व्यवहारों को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:-
1) मनोवैज्ञानिक विकृतियां(psychological disorders)
2) मनोदैहिक या मनोशारीरिक विकृतियां (psychosomatic or psycho-physical disorders)

1) मनोवैज्ञानिक विकृतियां-इस वर्ग की विकृतियों का कारण मानसिक या मनोवैज्ञानिक होता है और लक्षण प्रधानत: मानसिक होते हैं । इन विकृतियों को निम्नलिखित दो उप-वर्गों में विभाजित किया गया है-
क) मानसिक रोग से संबद्ध मनोवैज्ञानिक विकृतियां
ख) विशिष्ट रोग से असंबद्ध मनोवैज्ञानिक विकृतियां

क) मानसिक रोग से संबद्ध मनोवैज्ञानिक विकृतियां-इस वर्ग की मानसिक विकृतियों से प्रभावित व्यक्ति मानसिक रोग का शिकार होता है। जिसे दो भागों में विभाजित किया गया है -
अ) आंगिक मस्तिष्क संलक्षण(organic brain syndromes)- इसके अंतर्गत ऐसी मानसिक विकृतियां होती हैं जिसका संबंध स्थायी या अस्थायी आंगिक मस्तिष्क दुष्क्रिया से होता है और इस विकृति का कारण ज्ञात होता है। इसके अंतर्गत मनोभ्रंश(dementia), सरसाम/प्रलाप(delirium), स्मृति लोप संलक्षण(amnestic syndrome) तथा आंगिक भावात्मक संलक्षण(organic affective syndrome) मुख्य हैं।
ब) क्रियागत विकृति (functional disorder)-क्रियागत विकृति के अंतर्गत ऐसे लक्षण होते हैं, जिसका आधार मस्तिष्क का कोई संरचनात्मक दोष नही होता, बल्कि मस्तिष्क का क्रियागत दोष होता है। इसके अंतर्गत दो प्रकार की विकृतियां होती है-
i) स्नायुविकृति या मन:स्नायुविकृति-यह एक क्रियागत विकृति है जिसमें रोगी का संबंध भौतिक वास्तविकता से टूटता नहीं है किंतु वह अपेक्षाकृत अस्थाई मानसिक व्याधियों से पीड़ित होता है जो वास्तव में दुखद होते हैं। फ्रायड द्वारा स्नायु विकृति के चार प्रकारों; चिंता स्नायुविकृति(anxiety neurosis), मनोवैज्ञानिक डर(phobia) ,ग्रस्तता- बाध्यता(obsession compulsion तथा उन्माद(hysteria) का उल्लेख किया गया है। DSM-iv में स्नायुविकृति के स्थान पर चिंता स्नायुविकृति पद का उल्लेख किया गया है।जिसके पांच प्रकार बतलाए गए हैं आतंक विकृति, मनोभीति विकृति, बाध्यता विकृति ,सामान्यीकृत चिंता विकृति तथा प्रतिबल ।

ii) मनोविकृति-मनोविकृति एक ऐसी क्रियागत विकृति है, जिसमें रोगी का संबंध वास्तविकता से टूट जाता है और वह संज्ञानात्मक विकृतियों आदि का शिकार बन जाता है।दैनिक जीवन की मांगों को पूरा करने से संबंधित वास्तविक तथा कठिनाइयों की व्याख्या करने की योग्यता क्षतिग्रस्त हो जाती है, जिससे नाना प्रकार के संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, आदि लक्षण विकसित हो जाते है। मनोविकृति के मुख्य प्रकार मनोविदलता, एकध्रुवीय विकृति(स्थिर व्यामोह), द्विध्रुवीय विकृति/भावात्मक विकृति(उत्साह-विषाद मनोविकृति) , इत्यादि हैं।

ख) विशिष्ट रोग से असंबद्ध मनोवैज्ञानिक विकृतियां-इस वर्ग की मानसिक विकृतियों का आधार भी मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक ही होता है , परंतु यह पहले वर्ग की विकृतियों से भिन्न होती है। क्योंकि यह विकृति किसी विशिष्ट रोग से संबंधित नहीं होती है इस विकृति के भी मुख्यतः दो प्रकार हैं-
अ) मानसिक दुर्बलता -मानसिक दुर्बलता का तात्पर्य संरचनात्मक विकृतियों से है मस्तिष्क की संरचना या विकास में दोष उत्पन्न हो जाने पर जो विकृतियां उत्पन्न होती है, उन्हें मानसिक मंदन या मानसिक दुर्बलता हैं। बौद्धिक योग्यता के आधार पर मानसिक दुर्बलता को मोरोन(moron-75-51-IQ),इम्बेसाइल(imbecile-50-25-IQ) तथा इडियट(idiot- lower than 25-IQ) तीन प्रकारों को विभाजित किया गया है। नैदानिक लक्षणों के आधार पर मानसिक दुर्बलता को छ:प्रकारों में विभाजित किया गया है-i) मंगोलिज्म (mangolism),
ii)क्रीटीनिज्म(cretinism),iii)माइक्रोसेफाली
(microcephaly), IV)हाइड्रोसेफाली(hydrocephaly),
v) फेनीलेक्टोनूरिया(phenylketonuria,PKU), तथा vi)आमौरोटिक इडियोसी(amaurotic idiocy) ।

ब) व्यक्तित्व विकृतियां-इस श्रेणी के अंतर्गत निम्नलिखित पांच विकृतियों या असामान्य व्यवहारों का उल्लेख किया गया है-
1) गैर- सामाजिक व्यवहार(antisocial behaviour)
2) लैंगिक विकृतियां(sexual disorders)
3) बाल अपराध एवं अपराध कर्म(delinquency and crime)
4) मद्धपान(alcoholism)
5) औषधि व्यवसन(drug addiction)
उपयुक्त विकृतियों के अतिरिक्त अन्य कई विकृतियां की उल्लेख व्यक्तित्व विकृतियों की श्रेणी में की गई है; जैसे- शीजोआयड व्यक्तित्व विकृति(schizoid personality disorder) ,पारानोआयड व्यक्तित्व विकृति(paranoid personality disorder) ,हिस्टोरिक व्यक्तित्व विकृति (hysteric personality disorder, नारसिस्टिक व्यक्तित्व विकृति narcissistic personality disorder) ,इत्यादि

2) मनोदैहिक या मनोशारीरिक विकृतियां-इस श्रेणी के अंतर्गत ऐसी विकृतियां होती हैं जिनके कारक मनोवैज्ञानिक होते हैं, परंतु लक्षण शारीरिक रूप में दृष्टिगोचर होते हैंअधिकांश परिस्थितियों में शारीरिक लक्षणों के रूप में विकृतियों के विकास में प्रतिबल तथा मनोवैज्ञानिक कारको का हाथ होता है। ऐसी विकृतियों में हृदयवाहिका विकृतियां, अमाशय विकृतियां, श्वशन विकृतियां , अंत:स्रावी विकृतियां,जननमूत्र विकृतियां इत्यादि प्रमुख होती है।
ध्यान देने वाली बात यह है कि ऐसी विकृतियां दैहिक(somatic) या आंगिक(organic) कारणों से भी विकसित हो सकती है । ऐसी परिस्थिति में इन्हें मनोदैहिक विकृति या मनोशारीरिक विकृति की श्रेणी में ना रख कर केवल दैहिक या शारीरिक रोग माना जाता है।अतः मनोशारीरिक विकृतियों की श्रेणी के लिए यह आवश्यक है कि उनके विकास में प्रधानत: संवेगात्मक तनाव (emotional tension), चिंता (anxiety), द्वंद (conflict) ,प्रतिबल(stress) ,आदि मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रधानत: हाथ हो।

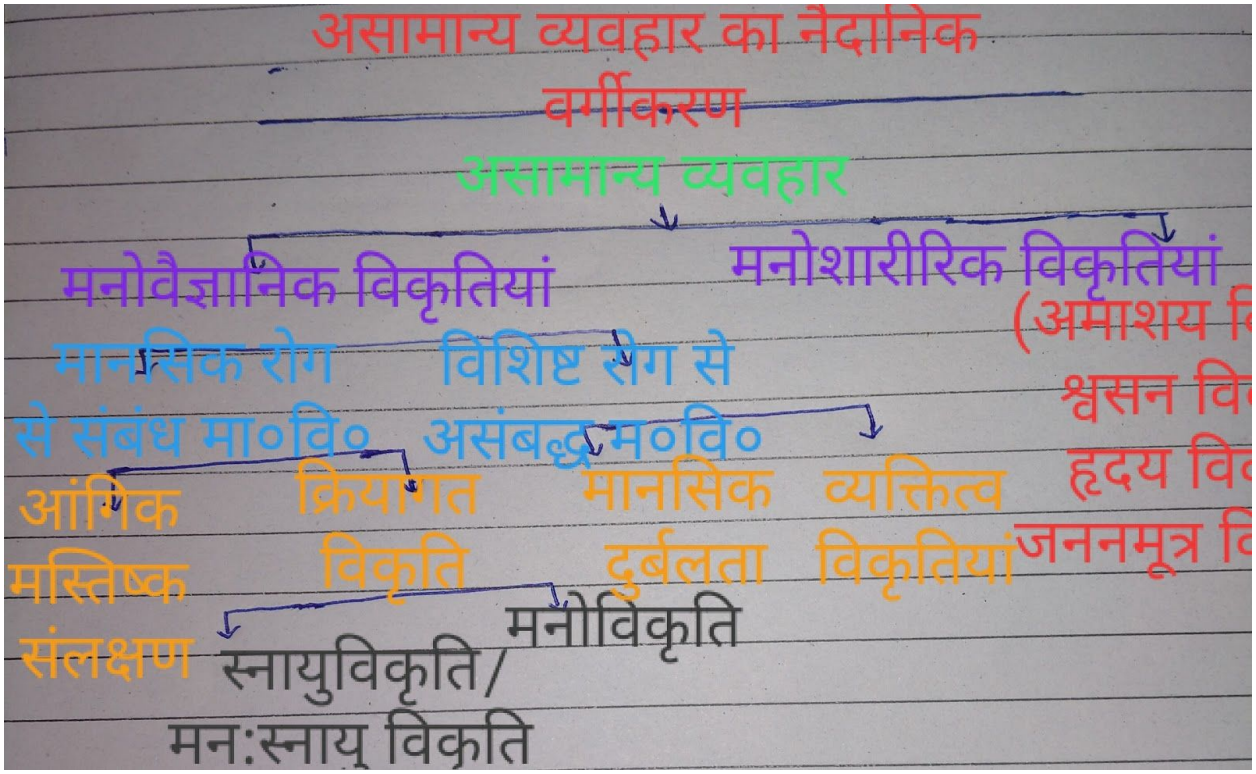

03/07/2020. -. Sanjay Kumar